हमारा साथ देंगे और हमारे साथ-साथ पंजाब भी भारत के साथ रहकर खुशहाल होगा। किन्तु जैसा कि मैं कह चुका हूं, सरकार को सही कदम उठाने चाहिए।

प्रधानमन्त्री (श्री राजीव गांधी) : अध्यक्ष महोदय, सर्वप्रथम मैं उन सभी व्यक्तियों के प्रति संवेदना प्रकट करता हूं जिन लोगों को गत कुछ दिनों के दौरान आतंकवादियों अथवा उग्रवादियों, चाहे जो कहा जाए, के हाथों परेशानियों का सामना करना पड़ा है। हम सभी इसको अत्यन्त गम्भीरता से लेते हैं। इसने एक नया मोड़ लिया है, आतंकवादियों द्वारा एक नये स्तर पर कार्य किया जा रहा है, और इस पर अत्यन्त गम्भीरतापूर्वक कार्यवाही करनी होगी। किन्तु यह खेद की बात है कि पूरे देश के सामने इतनी गम्भीर समस्या होने के बावजूद विरोधी दल के पचास सदस्य भी सभा में उपस्थित नहीं हैं। इससे पता चलता है कि ऐसे मामलों को वे लोग कितना महत्त्व देते हैं। अन्ततोगत्वा लोगों ने इस सभा में जो कुछ कहा है, सभा के विचार में तथा भावना में कोई अन्तर नहीं है, जो अभिव्यक्त की जा रही है और एक यही मामला है जिस पर विरोधी दल और सरकार एक मत होकर आतंकवादियों और उग्रवादियों को देश से बाहर उखाड़ फेंकेंगे।

गृह मंत्री इस वाद-विवाद का उत्तर देंगे और मैं उनके क्षेत्राधिकार में दखल नहीं देना चाहता। मुझे विश्वास है कि वह इन सभी प्रश्नों का उत्तर देंगे कि क्या कार्यवाही की गई है, क्या परिणाम निकले हैं; कौन-कौन से विशेष दल गठित किये गये हैं, कितने लोग गिरफ्तार किये गये हैं, वह उन सभी बातों का उत्तर दे देंगे जिनके बारे में उन्हें पता है कि क्या विशेष उपाय किये गये हैं और उनका प्रयोग कहां-कहां किया गया है, आदि। मुझे यह नहीं मालूम कि उनको जो भी जानकारी है, उसे वह आज सभा के समक्ष रख सकेंगे या नहीं, किन्तु जो सूचना वह खोज कार्य के कारण अथवा आगे की जाने वाली कार्यवाही के कारण वह प्रकट न कर सकेंगे, उसके बारे में मुझे विश्वास है कि जैसे ही सहूलियत होगी, किसी भी मामले में बिना किसी विलंब के वह सारे तथ्य यथा शीघ्र सभा में प्रस्तुत कर देंगे।

एक सदस्य ने यह प्रश्न उठाया है कि क्या सरकार अथवा दिल्ली प्रशासन और अन्य प्रशासनों ने जनता को इस बात की जानकारी दे दी है कि इस प्रकार के बम काण्ड घटित हो रहे हैं और इन उपकरणों से जनता को खतरा है। मेरे विचार से प्रशासन ने शीघ्र ही कदम उठाए हैं; क्योंकि यद्यपि अनेक बम फट गये थे, तथापि हम लोगों ने अनेक बमों पर काबू पा लिया है जिन्हें प्रचार के कारण जनता यह पहचान गई थी कि वे बम हैं। इससे खोज कार्य में सहायता मिल रही है। इसलिए यह प्रशासन की कमी न थी। वास्तव में जिस तेजी से उन्होंने प्रचार किया और जिस तेजी से इस सूचना का प्रसार हुआ उसकी प्रशंसा की जानी चाहिए और इसी के कारण अनेक बम युक्त उपकरणों को फटने से बचाया जा सका।

सदस्यों को इस बात की ठीक ही आशंका थी जिस गति से हमने आतंकवादियों की धर-पकड़ की है। हमारी कुछ रुकावटें और कुछ परेशानियां हैं। कानून के कारण भी हमारी कुछ सीमाएं हैं। कल या परसों हम इस सभा में कुछ संशोधन प्रस्तुत करने वाले हैं और हम लोग इस बात का विचार

[श्री राजीव गांधी]

कर रहे हैं कि आतंकवाद के विरुद्ध हम क्या कर सकते हैं। क्या आतंकवाद से निपटने के लिए हमारे कानून पर्याप्त हैं? यदि नहीं हैं, तो आतंकवाद से लड़ने के लिए हम इस सभा में एक विधेयक प्रस्तुत करेंगे।

एक सदस्य ने उल्लेख किया था कि आन्तरिक सुरक्षा के लिए एक मंत्री होना चाहिए। महोदय मेरा निवेदन है कि हमारे पास एक ऐसा मंत्री है।

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : अच्छा हुआ आपने शक दूर कर दिया।

[अनुवाद]

प्रो० मधु दंडवते : उनका विचार है कि उन पर असुरक्षा का आरोप है।

श्री राजीव गांधी : हम इस बात की जड़ तक पहुंचने की चेष्टा कर रहे हैं, जो पंजाब के लिए समस्या बनी हुई है। वास्तव में इस लड़ाई का राजनैतिक पहलू नहीं है। यहां एक ऐसी समस्या है जहां भारत की एकता और अखण्डता के लिए हमें समझौते और सहयोग के लिए तैयार रहना चाहिए और जहां हमें नमनशील होना चाहिए।

परन्तु इसके साथ ही साथ जहां हिंसात्मक कार्यवाही करने का प्रश्न उन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए पैदा होगा, जहां उन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आतंकवाद की स्थिति लाने की बात होगी, जहां हमारे राष्ट्र की एकता तथा अखण्डता को खतरा होने का प्रश्न उठेगा तथा जहां एक भाग के अलग होने का प्रश्न उठेगा वहां हमें सख्ती से निपटना होगा। हमें सख्त बनना होगा और हमें आशा है कि सारा सदन इन दोनों नीतियों को एक साथ अपनाने में हमारे साथ होगा।

महोदय, एक दल जल, चण्डीगढ़ तथा क्षेत्र की बात कर रहा है। परन्तु हो सकता है, वास्तव में वे जिसकी बात कर रहे हैं वह सारे पंजाब क्षेत्र के सम्बन्ध में है—किस प्रकार से मुख्य मंत्री पद पर बैठ सकते हैं; जबकि एक अन्य ग्रुप है जो उसी क्षेत्र के बारे में अलग ढंग से इसे छीन लेने के बारे में बातें कर रहा है। हमें दूसरे ग्रुप के साथ अपनी पूरी शक्ति के साथ लड़ना होगा; और हम ऐसा करेंगे।

प्रो० दण्डवते ने कुछ मुद्दे उठाये हैं जिनको मेरे विचार में थोड़ा स्पष्ट करने की आवश्यकता है। गत तीन वर्षों में जो कुछ हुआ है उसके बारे में मैं विस्तार से नहीं कहना चाहता, क्योंकि उसके बारे में हम सबको मालूम है; इस पर हम बहुत बार वाद विवाद कर चुके हैं। उन्होंने जो अधिकांश आरोप लगाए हैं उनका अधिकाधिक उत्तर इस सदन में दिया जा चुका है। बार-बार उन पर चर्चा करने का कोई लाभ नहीं है।

उन्होंने स्वर्ण मन्दिर परिसर में भोजन के साथ हथियार चोरी छिपे ले जाने का प्रश्न उठाया है—ठीक, उन्होंने भोजन के ट्रक कहा। परन्तु अगर मुझे ठीक से याद है, यह भोजन के ट्रकों मे था; परन्तु यह गेहूं की बोरियों में भी था तथा भोजन के थैलों में भी। मैं यह कहना चाहता हूं कि ये ट्रक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक समिति के थे, और इन ट्रकों को अन्दर आने और बाहर जाने की विशिष्ट अनुमति उस समय शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक समिति देती थी। इस समय से शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक समिति में कोई विशेष परिवर्तन नहीं आया है। अत: यद्यपि हम सभी यथा सम्भव निबाहना चाहते हैं, कुछ बातें हैं जिन्हें हमें ध्यान में रखना चाहिए। हम यह नहीं भूल सकते कि ये गतिविधियां शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक समिति की पूर्ण मदद के बिना नहीं हो सकती थी। अगर लोग स्वर्ण मन्दिर में गये हों, वे अकाल तख्त के अन्दर बैठे हुए थे, वे वहां पर इसलिए बैठे हुए थे क्योंकि उन्हें उसके अन्दर आने की प्रबन्धकों से अनुमति प्राप्त थी।

अब, एक और छोटी सी बात है। प्रो० दण्डवते जी ने कहा : हो सकता है, हम एक धातु-खोजी लगा (मेटल डिटेक्टर) यन्त्र लगा सकते हैं जिसके अन्दर पूरा ट्रक गुजर सके। मैं उन्हें याद दिलाना चाहूंगा कि ट्रक धातु के बने होते हैं। अत: उनका पता लगाया जा सकता है।

प्रो० मधु दंडवते : मैंने इलेक्ट्रानिक यन्त्र के लिए कहा था, और धातु-खोजी यन्त्र हमारे लिए; तथा उनके लिए, इलेक्ट्रानिक यन्त्र।

श्री राजीव गांधी : जैसा कि मैंने पहले कहा, एक सदस्य ने कहा कि सभी अकाली नेता एक जैसे नहीं हैं। सभी सिख एक जैसे नहीं हैं; सभी सिख अकाली नहीं हैं। सभी अकाली दल के लोग आतंकवादी नहीं हैं। यह सत्य है, और हमें यह ज्ञात है। परन्तु सदस्यों ने यह कहा है।

प्रो० दंडवते जी ने बादल जी द्वारा लिखित एक पत्र पढ़कर सुनाया है जो, उन्होंने कहा, कि प्रेम पत्र नहीं था। हो सकता है, किसी दिन वह अपने किसी अन्य पत्र को भी पढ़कर सुनाएं।

(व्यवधान)

प्रो० मधु दंडवते : अगर यह प्रेम पत्र होता तो मैं इसे यहां पढ़कर नहीं सुनाता।

श्री राजीव गांधी : मैंने कहा है : हो सकता है, किसी दिन वह अपने किसी अन्य पत्र को भी पढ़कर सुनाएंगे।

अध्यक्ष महोदय : क्या उसकी अनुमति देने की आपको मुझसे आशा है, महोदय ?

श्री राजीव गांधी : उनको पत्रों को जाने बिना मैं इस पर टिप्पणी नहीं कर सकता।

परन्तु मेरे विचार में यह हम सभी के लिए एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण घड़ी है; और जैसा कि

[श्री राजीव गांधी]

बहुत से सदस्यों ने कहा है, अकाली दल के सदस्य खुलकर सामने आये हैं, शायद पहली बार इतने प्रभावी ढंग से वे खुलकर सामने आये हैं। मेरे विचार में यह एक रचनात्मक कदम है; न केवल अकाली दल बल्कि पहली बार हम यह देख रहे हैं कि बहुत से सिख खुलकर इन कार्यवाहियों की निन्दा कर रहे हैं और अपने सिख भाइयों व बहनों ने इन कार्यवाहियों की खुलकर निंदा करने में जो साहस दिखाया है उसके लिए मैं उनका धन्यवाद करता हूं, क्योंकि किसी समय उन्हें भी आतंकवादियों का मुकाबला करना होगा; और सारे सदन को उन सभी सिखों को बधाई देनी होगी जिन्होंने साहस दिखाया है तथा इसके विरुद्ध आवाज उठाने के लिए सामने आये हैं। हम ऐसी स्थिति में पहुंच गये हैं जहां हमें उससे ऊपर उठना होगा जो कुछ हम सहज ही में करना चाहते हैं अथवा महसूस करते हैं कि ऐसा करना चाहिए। अपने विचार खुले रूप में व्यक्त करने दें हमें उनकी सहायता करनी चाहिए। हमारे पास आज एक विकल्प है। हमारे पास आज उग्रवादियों तथा आतंकवादियों के छोटे से ग्रुप का विरोध करने तथा भारत के शेष सिखों को अपने साथ लेकर चलने का विकल्प है। जब मैं कहता हूं 'हमारे साथ' तो मेरा अर्थ सरकार से नहीं है, मेरा मतलब सदन से है, देश से है। और हम आसानी से गलती कर सकते हैं, एक गलत कदम उठा सकते हैं और हमारे विवेक में छोटी सी भूल अथवा हमारी कार्यवाही में की गई थोड़ी सी जल्दबाजी उस सारे ग्रुप को हमारे विरुद्ध कर सकता है। और यह ऐसी स्थिति है जहां हमें पूर्ण संयम तथा बड़े धैर्य के साथ कार्यवाही करनी होगी और वास्तव में हम वह बात कर रहे हैं जो गांधी जी ने हमें शुरू से सिखाई है, अन्तिम क्षण तक अहिंसा। उन्हें हमें भड़काने दीजिए। परन्तु पहले की भांति, फिर से बहुत से सदस्यों के कहने पर चर्चा शुरू हुई, प्रत्येक बार यह शुरू होकर निर्णय की तरफ चलता है और यह शुरू होकर निष्कर्ष पर पहुंचती है और स्थिति अच्छी होने लगती है कि कुछ हो गया। हम सबने इस उत्तेजना के प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की। उसका क्या परिणाम निकला? उसका परिणाम यह था कि जो भी प्रक्रियाएं शुरू की गई थीं उन्हें तिलांजलि दे दी गई। अब, जो कार्यवाही हमने शुरू की है उसको चालू रखने के लिए हमें साहस दिखाना होगा और हमें निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए और उग्रवादियों को इस देश के प्रत्येक व्यक्ति से अलग-थलग करने के लिए साहस करना होगा। यह काम करने के लिए हमें प्रत्येक व्यक्ति की सहायता की जरूरत होगी। और यह ऐसा समय है जब विरोधी दल के सदस्यों को, विशेषकर विरोधी पक्ष के नेताओं को इसे सरकार के साथ अथवा किसी दूसरे दल के साथ एक राजनैतिक युद्ध के रूप में परिवर्तित नहीं करना चाहिए। ऐसा करना बहुत ही सरल है। यह सबसे सरल तरीका है।

प्रो० मधु दंडवते : क्या आपको ऐसा लग रहा है? क्या यहां पर आपको ऐसा युद्ध महसूस हो रहा है?

श्री राजीव गांधी : मैं इस बात पर आऊंगा। मैं प्रो० दंडवते जी की बात का जवाब दूंगा। नहीं, सदन में ऐसा नहीं हुआ है। परन्तु मैं इसकी थोड़े समय बाद चर्चा करने वाला था अर्थात्, जो कहा गया है उस पर कार्यवाही भी की जानी चाहिए। जब तुरन्त ही बन्द का आह्वान किया जाता है, जब

तुरन्त ही लोगों द्वारा कार्यवाही की जाती है तो यह अधिक क्षति पहुंचाने वाला है और इसके प्रति हमें सदैव सतर्क रहना चाहिए। मैं दोष लगाने की कोशिश नहीं कर रहा हूं, क्योंकि किसी पर भी दोष लगाना ठीक नहीं होगा। हमें उस प्रत्येक व्यक्ति को संतुष्ट करना होगा जिसको हमारी कार्यवाही के प्रति, जो हम कर रहे हैं; कोई अंदेशा है। वास्तव में यही एक ठीक कार्यवाही करने का तरीका है और कोई अन्य वास्तविक विकल्प नहीं है।

आज हमने देखा है कि अकाली दल के नेताओं, अकाली दल के परम्परागत नेताओं ने किसी हद तक एक निर्णय लिया है। हो सकता है कि हम सभी यह चाहते हों कि उन्हें और भी दृढ़ कदम उठाने चाहिए थे। परन्तु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि कुछ दिन पहले वे इतना भी नहीं कर सकते थे। हमें तो ठोस पहलू को देखना चाहिए और यह देखना चाहिए कि किस प्रकार से हम उनके स्वयं के निर्माण में मदद दे सकते हैं और उनकी इस प्रकार से सहायता न करें कि हम उन्हें हमेशा के लिए नुकसान पहुंचा दें परन्तु हमें अपने कार्यों से उनकी सहायता करनी है न कि प्रतिक्रिया व्यक्त करके जैसा कि उग्रवादी तथा आतंकवादी हमसे करवाना चाहते हैं। वे अभी तक यही चाहते रहे हैं कि एक ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाये और सारी कौम देश से अलग हो जाए। और आज हम ऐसी ही स्थिति से बचना चाहते हैं।

विरोधी पक्ष की ओर से भी इन आतंकवादी गतिविधियों में 'विदेशों का हाथ' की बात सुनकर अच्छा लगा है। परन्तु मैं उन्हें याद दिलाना चाहूंगा कि जब कभी भी सत्ता पक्ष ने इस मामले को उठाया तो उन्होंने इसका बहुत ही व्यंगात्मक तरीके से विरोध किया। परन्तु तथ्य यह है कि इसमें विदेशों का हाथ है। आप यह जानते हैं, और इसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। इसके साथ ही इस बात को बहुत अधिक महत्त्व देने से और यह बहाना बनाने से कि यही एक समस्या है कोई बात नहीं बनती है। यह इससे ज्यादा बड़ी समस्या है और हमें इसके सभी पहलुओं पर विचार करना होगा। एक सदस्य ने कहा है कि पंजाब नेतृत्वहीन है। मैं उनके मत से सहमत नहीं हूं। अकाली दल में नेता की समस्या हो सकती है परन्तु मेरे विचार में पंजाब में नेतृत्व की कोई समस्या नहीं है। एक अन्य सदस्य ने अकाल तख्त के तोड़े जाने का उल्लेख किया। इस पर मेरा निवेदन यह है कि यह सिखों का अपना मामला है और वे अपनी धार्मिक संस्थाओं में जो कुछ करना चाहते हैं हमें इसमें हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। अगर वे इसे हटाना चाहते हैं, वे इसे हटा सकते हैं। अगर वे एक 24 मंजिल इमारत बनाना चाहते हैं वे ऐसा कर सकते हैं, बशर्ते कि वह वहां की नगर पालिका के नियमों के अन्तर्गत हो। अतः वे जो चाहें कर सकते हैं।

तथ्य यह है कि आज आत्मसंतोष के लिए कोई स्थान नहीं है। अपने देश में हम पहली बार गत 2 या 3 वर्षों से आतंकवाद की समस्या का सामना कर रहे हैं। गत सप्ताह, इसने एक नया मोड़ लिया है, एक अधिक खतरनाक मोड़। यह सिर्फ युवा लड़कों तक सीमित था जो बंदूक या मशीनगनों के साथ आकर लोगों को निशाना बना रहे थे। जहां कहीं भी वे नजर आये या जहां भी वे दिखाई दे सके। उन्हें पकड़ा जा सका। यह एक अलग तरीका है। ऐसे बम रखे जा रहे हैं जिन्हें लोग उठाने के लिए

[श्री राजीव गांधी]

आकर्षित हो। इस कार्य को कौन कर रहा है पता लगाना इतना सरल नहीं है। जहां कहीं भी आतंकवाद इस प्रकार से आया है, किसी भी राष्ट्र में आया है, वे उसे थोड़े से समय में दूर नहीं कर सके। उसे समाप्त करने में कुछ समय अवश्य लगा है। और हमें अपने आपको ऐसी स्थिति से निपटने के लिए तैयार करना होगा। हमें अपनी मशीनरी को मजबूत बनाना पड़ेगा चाहे वह गुप्तचर हो, चाहे वह पुलिस हो, चाहे वह प्रशासनिक हो अथवा कोई नागरिक सुरक्षा संबंधी व्यवस्था हो और हमें जनता में जागरूकता लानी होगी स्वयंसेवी संगठनों का और सभी राजनैतिक संगठनों का यह पता लगाने के लिए कहां गलत कार्य चल रहा है तथा कहां असामान्य चीजें रखी गई हैं, उपयोग करना होगा। जागरूकता होनी चाहिए। लोग वहां जाकर उन चीजों को झपट कर न उठा लायें और स्वयं मारे जायें। यह ऐसी बात है जिस पर हमें विचार करना है और इसके लिए कुछ करना चाहिए।

आतंकवाद तब आता है जब कोई कमजोरी होती है। हमें इस कमजोरी पर काबू पाना चाहिए। हमारे इससे पहले के प्रधानमंत्री, इंदिरा जी ने अकाली दल के हमारे मित्रों को आगाह किया था कि उन्हें अपने आंदोलनों को किस प्रकार चलाना है इस पर बहुत सावधानी बरतनी होगी। अगर मुझे ठीक से याद हो तो उन्होंने इस सदन में कहा था : "अगर आप ऐसे मार्ग पर नीचे जाना शुरू कर दें जहां से आप वापस नहीं आ सकते तो यह बहुत ही खतरनाक है।" इसी कारण, हमें यह देखना पड़ता है कि हमारे द्वारा दिये गये वक्तव्य तथा हमारी कार्यवाहियां ऐसी न हों जो उग्रवादियों तथा आतंकवादियों की सहायता करती हों।

हालांकि अकाली नेतृत्व का रुख कुछ मामलों में रचनात्मक रहा है, उन्होंने हाल ही में कुछ ऐसी बातें कही हैं तथा काम किये हैं जिनसे उग्रवादियों तथा आतंकवादियों को प्रोत्साहन मिला है। उन्हें अब ऐसा नहीं करना चाहिए। उन्हें न तो यह कहना चाहिए बल्कि उन्हें ऐसा कार्य भी नहीं करना चाहिए। और यहां पर मैं विरोधी पक्ष के अपने मित्रों से, जो उन्हें अच्छी प्रकार से जानते हैं, यह चाहता हूं कि वे बात करें और उन्हें संतुष्ट करें कि अगर हमें इन आतंकवादियों तथा उग्रवादियों से लड़ना है तो हमें इकट्ठे होकर लड़ना होगा।

ऐसी स्थिति से आतंकवादियों को हमेशा लाभ पहुंचेगा। वे अपना समय चुनते हैं, वे अपना स्थान चुनते हैं। आज यह ट्रांजिस्टर रेडियो है, कल कुछ और भी हो सकता है जो पहचाना न जा सकता हो। हमें इसकी तह में जाकर इसकी जड़ तक पहुंचना होगा। हमें उन्हें समाप्त करना होगा।

मुझे विश्वास है कि गृह मंत्री ने पहले ही सख्त कदम उठाये हैं और वह और भी सख्त कदम उठायेंगे ताकि समाज से इस कैंसर को दूर किया जा सके।

यही समय है जबकि हम सभी को इससे लड़ने के लिए न केवल एक समुदाय में बल्कि सभी

समुदायों में, सभी धर्मों के लोगों में, सभी क्षेत्रों के लोगों में जनमत जुटाना होगा। इस प्रकार की हत्याएं हमारे प्रजातंत्र पर एक धब्बा छोड़ती हैं और हमें इनको समाप्त करना होगा। हिंसा का हमारे समाज में कोई स्थान नहीं है। भारत की अखंडता तथा एकता सर्वोपरि हैं तथा हम इसको प्रभावित करने वाले किसी भी कार्य को नहीं होने देंगे।

अन्त में, यह हमारा सौभाग्य है कि हम भारत में, गांधी जी तथा पंडित जी के भारत में जन्में हैं जहां उन्होंने अंग्रेजों की गोलियों लाठियों का पूर्णतया अहिंसात्मक ढंग से मुकाबला किया था। अहिंसा के लिए हिंसा से अधिक साहस व हिम्मत चाहिए, और हाल ही में जो कुछ घटनायें हुई हैं वे शौर्य के कार्य नहीं हैं वे कायरता के काम हैं और हमें इनसे अपनी पूरी शक्ति के साथ लड़ना होगा। महोदय, धन्यवाद।

श्रीमती डी० के० भंडारी (सिक्किम) : अध्यक्ष महोदय, दिल्ली तथा उत्तर भारत के अन्य भागों में बम विस्फोट करने वालों ने यह अत्यधिक घृणित कार्य किया है जिसके परिणामस्वरूप कई निर्दोष लोगों की मृत्यु हुई है और कई घायल हुए हैं। इस घृणित कार्य की निन्दा करने के लिए हमारे पास शब्द नहीं हैं। ये काम ऐसे समय में किए गए हैं जबकि हमारे देश का प्रत्येक नागरिक पंजाब समस्या के समाधान के लिए केन्द्र द्वारा हाल ही में उठाये गए कदमों का अकाली दल से कोई ठोस प्रतिक्रिया की अपेक्षा कर रहा था। इससे स्पष्ट हो जाता है कि राजी करने के तरीके का राष्ट्र-विरोधी ताकतों पर कोई प्रभाव नहीं हुआ है। अत: मैं समझता हूं सरकार को इन लोगों के प्रति कठोर रुख अपनाना चाहिए और इन लोगों को हमेशा के लिए जड़ से मिटा दिया जाना चाहिए। स्थिति ऐसी है कि इस संकट काल में प्रत्येक नागरिक को सरकार द्वारा इन विरोधी तत्वों, जो हमारे देश को विखंडित करना चाहते हैं, को मात देने के लिए की गई किसी भी कार्यवाही का समर्थन करना चाहिए। सिक्किम संग्राम परिषद की ओर से, हम सरकार तथा प्रधानमंत्री, श्री राजीव गांधी को, उनके द्वारा राष्ट्र विरोधी तथा अज्ञात बलों को समाप्त करने के लिए की जाने वाली हर कार्यवाही का समर्थन करेंगे। धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय : श्रीमती कृष्णा साही।

श्रीमती कृष्णा साही (बेगूसराय) : मुझे ज्वर हो रहा है। महोदय, इसलिए मैं जा रही हूं।

अध्यक्ष महोदय : क्या अब मैं गृह मंत्री से वक्तव्य देने के लिए कहूं।

कुछ माननीय सदस्य : जी नहीं, महोदय।

अध्यक्ष महोदय : तब मैं श्री कृष्ण दत्त सुलतानपुरी को बुलाऊंगा।